अन्तरराष्ट्रीय शांति संगोष्ठी का कार्यवृत्त

अतुल्य भारत:

संस्कृति और राष्ट्र

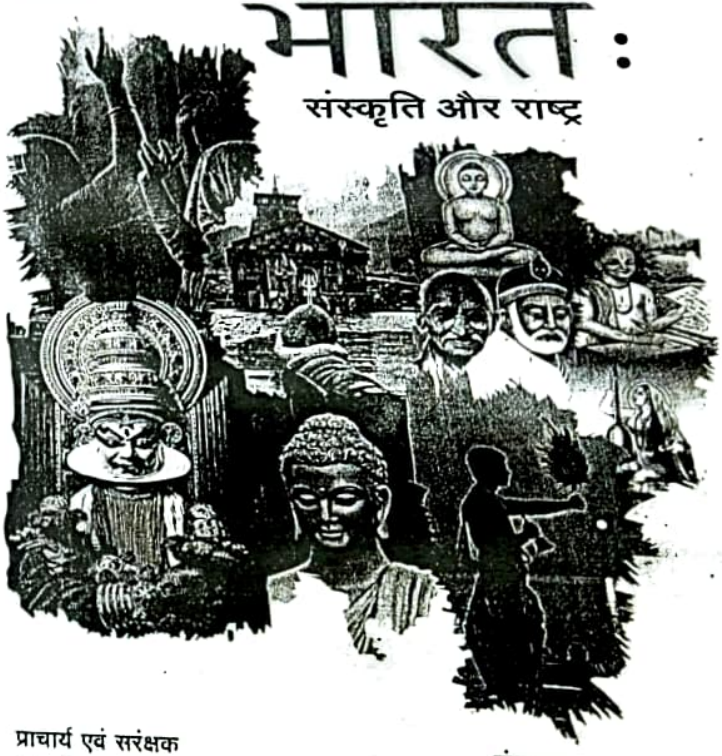

प्राचार्य एवं सरंक्षक
डॉ. जी. एस. रोहित

संपादक
डॉ. सरोज गुप्ता
डॉ. संध्या टिकेकर

Self Attested

इन्टरनेशनल कॉन्फ्रेंस – प्रोसीडिंग पीयर-रिव्यूड, रिफर्ड बुक
(पूर्व समीक्षित, सन्दर्भित पुस्तक)
हिन्दी विभाग – पं. दीनदयाल उपाध्याय, शासकीय कला एवं वाणिज्य
महाविद्यालय, सागर (म.प्र.)

पीयर रिव्यू टीम

डॉ. श्रीराम परिहार, सेवानिवृत्त प्राचार्य, खण्डवा (म.प्र.)
डॉ. ए.सी. जैन, विभागाध्यक्ष वाणिज्य, शासकीय महाविद्यालय, मकरोनिया
डॉ. दिव्या गुरु, विभागाध्यक्ष अंग्रेजी, शासकीय महाविद्यालय, मकरोनिया
डॉ. इमराना सिद्दीकी, विभागाध्यक्ष रसायनशास्त्र, पं. दीनदयाल उपाध्याय
शासकीय कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, सागर (म.प्र.)
डॉ. अमर कुमार जैन, प्राध्यापक वाणिज्य, पं. दीनदयाल उपाध्याय शासकीय
कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, सागर (म.प्र.)
डॉ. विनय शर्मा, प्राध्यापक अंग्रेजी, पं. दीनदयाल उपाध्याय शासकीय कला
एवं वाणिज्य महाविद्यालय, सागर (म.प्र.)

वैधानिक चेतावनी

पुस्तक के किसी भी अंश के प्रकाशन-फोटोकॉपी, इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों से उपयोग के लिए लेखक/संपादक/प्रकाशक की लिखित अनुमति आवश्यक है। पुस्तक में प्रकाशित शोध-पत्रों में निहित विचार तथा संदर्भों का संपूर्ण दायित्व स्वयं लेखकों का है। संपादक/प्रकाशक इसके लिए उत्तरदायी नहीं है।

© सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रथम संस्करण : 2018

ISBN : 978-81-89740-62-7

प्रकाशक : कृष्णा कम्प्यूटर, सागर (म.प्र.)

मूल्य : 650/-

मुद्रक : स्वतंत्र कम्प्यूटर एण्ड प्रिंटर्स
सागर (म.प्र.) ☎ : 07582-243728
मो. 9981466528

Self Attested

संरक्षक : डॉ. जी.एस. रोहित
अतिरिक्त संचालक, उच्च शिक्षा विभाग,
सागर संभाग, सागर

परामर्श एवं मार्गदर्शक : डॉ. श्रीराम परिहार, डी.लिट्

संपादक : डॉ. सरोज गुप्ता, विभागाध्यक्ष, हिन्दी
पं. दीनदयाल उपाध्याय शास. कला एवं वाणिज्य
महाविद्यालय, सागर
• डॉ. संध्या टिकेकर, विभागाध्यक्ष, हिन्दी
शासकीय महाविद्यालय, बीना

संपादक मण्डल : डॉ. छाया चौकसे, प्राध्यापक, हिन्दी
पं. दीनदयाल उपाध्याय शास. कला एवं वाणिज्य
महाविद्यालय, सागर
• डॉ. रंजना मिश्रा, प्राध्यापक, हिन्दी
पं. दीनदयाल उपाध्याय शास. कला एवं वाणिज्
महाविद्यालय, सागर
• डॉ. घनश्याम भारती, विभागाध्यक्ष, हिन्दी
शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गढ़ाकोट
• डॉ. सत्या सोनी, अतिथि विद्वान
पं. दीनदयाल उपाध्याय शास. कला एवं वा
महाविद्यालय, सागर

Scanned by TapScanner

...किया, तो दूसरी ओर सन्त साहित्य ...तुलसी में उन्होंने लोक–जागरण देखा।

हम यह कह सकते हैं कि हर युग में जो साहित्य लिखा गया है, उसका प्रभाव साहित्य का समाज पर और समाज का साहित्य पर पड़ रहा है। गणेशशंकर विद्यार्थी, महात्मा गाँधी आदि जैसे संपादकों ने लेख और संपादकीय लिखकर लोगों को देशप्रेम की प्रेरणा दी।

राष्ट्रीयता का भाव मानव का प्रथम पायदान है। कवियों ने कविता, गीतों, गजलों, लेखों, संपादकीय आदि के माध्यम से जन–जन तक व्यक्ति के अंदर राष्ट्रीयता का संचार किया। यानी हम कह सकते हैं कि राष्ट्रवादी चेतना की सुप्तधारा को नयी दिशा मिली एवं जनजागरण को नयी चेतना और जागृति मिली।

संदर्भ :–

1. सं. विश्वनाथ त्रिपाठी, अरूण प्रकाश, हिंदी के प्रहरी डॉ. रामविलास शर्मा, प्रथम संस्करण, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली, 2002, पृष्ठ संख्या 137
2. रामविलास शर्मा, सन् सत्तावन की राज्यक्रांति और मार्क्सवाद, तीसरा संस्करण, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 1990, पृष्ठ संख्या 402
3. डॉ. मीरा रानी बल, राष्ट्रीय नवजागरण और हिंदी पत्रकारिता, प्रथम संस्करण, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2005, पृष्ठ संख्या 30–31
4. हजारी प्रसाद द्विवेदी, साहित्य सहचर, प्रथम संस्करण, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2013, पृष्ठ संख्या 18
5. सं. डॉ. दिनेश प्रताप सिंह, हिंदी गद्य–पद्य संग्रह, भाग– 1, प्रथम संस्करण, मोतीलाल बनारसीदास, नई दिल्ली, 2008, प्राक्कथन
6. वही, प्राक्कथन
7. वही, प्राक्कथन
8. डॉ. बलदेव वंशी, आधुनिक हिंदी कविता में विचार, प्रथम संस्करण, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 1982, पृष्ठ संख्या 126
9. डॉ. किरण सिंह, हिंदी समीक्षा और डॉ. रामविलास शर्मा, प्रथम संस्करण, ग्लोरियस पब्लिशर्स, नई दिल्ली, 2008, पृष्ठ संख्या 12

Self Attested

भारतीय पत्रकारिता का अतुल्य स्वरूप– राष्ट्रीय आंदोलन के विशेष संदर्भ में

अभिषेक अग्रवाल, डॉ. श्रद्धा गर्ग

आधुनिक जीवन में प्रेस की भूमिका महत्त्वपूर्ण रही है। प्रेस न केवल सरकार के ऊपर अंकुश रखता है, बल्कि सरकार को जनता की भावनाओं एवं विचारों से अवगत कराता है। मुख्यतः पत्रकारिता का कार्य सरकार की नीतियों को जनता तक पहुँचाना, सरकार को जनता की आवश्यकताओं तथा सरकारी नीतियों की प्रतिक्रिया से अवगत कराना तथा देशी और विदेशी समाचार देना है।

प्रेस सरकार के ऊपर अंकुश भी रखता है। अपने लेखों तथा विचारों से सरकार को जनता की भावनाओं एवं विचारों से अवगत कराता है। प्रेस समाज को रूप, बल एवं बुद्धि प्रदान करता है। जनता के हाथों में प्रेस एक महत्वपूर्ण अस्त्र है तथा विचारों को तेजी से एक बड़ी संख्या में लोगों में फैलाने का प्रभावकारी माध्यम भी। आधुनिक समय में प्रेस एक अत्यन्त महत्वपूर्ण तथा अनिवार्य सामाजिक संस्था बन गया है, किन्तु उपयोगिता भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के समय से अत्यन्त व्यापक रही है।

यद्यपि पत्रकारिता का कार्य सरकार की नीति को जनता तक पहुँचाना और सरकार को जनता की आवश्यकताओं तथा सरकारी नीतियों से अवगत कराना होता है, किन्तु भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के समय हिन्दी पत्रकारिता तथा हिन्दी समाचार पत्रों ने उपनिवेशवाद के विरुद्ध आजादी का अलख जगाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की।

आधुनिक भारतीय समाचार पत्रों का इतिहास यूरोपीय लोगों के आने के साथ–साथ आरम्भ हुआ। अंग्रेजों ने मुख्यतः अंग्रेजी समाचार पत्रों को बढ़ावा दिया तथा उपनिवेषवाद का पोषण किया किन्तु भारतीयों ने भारतीय भाषा के समाचार पत्रों के माध्यम से राष्ट्रीय जागृति लाने का कार्य किया। भारत में राष्ट्रीय भावना के उदय तथा विकास में प्रेस की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण रही है जिसमें विशेषकर हिन्दी पत्रकारिता की भूमिका

शोध छात्र (इतिहास विभाग), गुरू घासीदास (केन्द्रीय) विश्वविद्यालय, बिलासपुर (छ.ग.)
सहायक प्राध्यापक (राजनीति विज्ञान विभाग), गुरू घासीदास (केन्द्रीय) विश्वविद्यालय, बिलासपुर

साहित्य का योगदान
डॉ. अनुपम कुमारी
71. भारत की महान ऐतिहासिक पृष्ठभूमि : एक समालोचनात्मक अध्ययन — 405
डॉ. भरत कुमार शुक्ला
72. भारतीय संस्कृति का आधार धर्म — 411
डॉ. अर्चना शर्मा
73. भारतीय संस्कृति — 414
डॉ. अजय कुमार जैन
74. राष्ट्रवादी चेतना का धरातल और हिंदी साहित्य (ऐतिहासिक संदर्भ) — 418
लक्ष्मी प्रसाद कर्ष
75. भारतीय पत्रकारिता का अतुल्य स्वरूप– राष्ट्रीय आंदोलन के विशेष संदर्भ में — 427
अभिषेक अग्रवाल, डॉ. श्रद्धा गर्ग
76. भारत में हिन्दी की साहित्यिक सम्पदा का विकास — 429
डॉ. घनश्याम भारती

Self Attested

शुभकामना संदेश

भारत समृद्ध संस्कृति और सम्पन्न परंपराओं का राष्ट्र है । विश्व पटल पर भारत की छवि एक 'अतुल्य राष्ट्र' की है । इस अतुल्य राष्ट्र का अपना गौरवशाली, कालजयी विचार है – "सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया । सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद दुःख भाग भवेत ।।" जो मानव को उसकी संपूर्णता के साथ जीने की चेतना देता है । सामाजिक समरसता की भावना से संतृप्त इस राष्ट्र का सांस्कृतिक फलक जितना विस्तृत है, उतना ही सघन भी । साहित्य कला, संस्कृति, परंपराओं से जुड़ा इसका प्रत्येक रचनात्मक कर्म अपने में वैज्ञानिकता और संवेद्यता के बहुविध पक्षों को पूरे समन्वय समेटे हुये है और राष्ट्र की मूल चेतना से जुड़ा इसका हर पक्ष अन्त मानवीयता के धरातल को ही स्पर्श करता है । "जियो और जीने के विचार से युक्त देश की पावन भूमि की मूल भावना सद पारस्परिक सौहार्द्र की रही है । अपनी ऐसी ही अनन्यतम् विशिष्ट के कारण भारत 'अतुल्य' रहा है ।

वर्तमान की भौतिक चकाचौंध, उसका आकर्षण बाजारवादी सत्ता के चलते भारत की अतुल्यता से देशवासि ध्यान कुछ हट सा गया है । उसके नकारात्मक परिणाम भी आसपास के परिदृश्य में विद्यमान हैं । यही वह समय है देशवासियों का ध्यान पुनः राष्ट्रीय धरोहर की विशेषताओं क आकर्षित किया जाय ।

अत्यन्त हर्ष का विषय है कि पं. दीनदयाल उ शासकीय कला एवं वाणिज्य, अग्रणी महाविद्यालय, सागर भारत : संस्कृति और राष्ट्र' विषय पर केन्द्रित अन्तरराष्ट्र संगोष्ठी का आयोजन 23–24 दिसंबर2018 को करने जा

Scanned by TapScanner